आधुनिक संस्कृत दूतकाव्यों में भारत–महिमा

*डॉ. भास्कर शर्मा

वैदिक साहित्य से लेकर आज तक भारतीय साहित्य में भारत की महिमा का उल्लेख अनेक प्रकार से किया है। जब वेद का ऋषि कहता है कि 'अहं भूमिमददाम् आर्याय'[1] अर्थात यह भूमि मैंने आर्यो को दी है, तो निश्चित रूप से भारत के प्राचीन नाम आर्यावर्त से इसका संबंध स्पष्ट दिखाई देता है। उसके पश्चात संस्कृत साहित्य मेंअनेक स्थलों पर भारत की महिमा का अनेक प्रकार से वर्णन किया गया है। काव्यों में तो इसका सर्वोत्कृष्ट रूप प्राप्त होता है। भारत महिमा के अन्तर्गत कवियों ने भारत की भूमि, स्थल, नगर, ग्राम, प्राकृतिक सम्पदा, महापुरूषों इत्यादि अनेक तथ्यों का वर्णन किया है।

जहां तक दूतकाव्यों का प्रश्न है, इनमें प्रणय संबंधित, राजनीतिक तथा अन्य उद्देश्यों की पूर्ति के लिए दूत का सम्प्रेषण सर्वविदित है। इनमें साहित्यिक दूत का स्वरूप तो कवि प्रतिभा के कारण और भी मनोरमा लगता है। महाकवि कालिदास से विचार सरणी प्रारंभ होकर अद्यतन प्रवाहित है। आधुनिक काल में रचित संस्कृत दूतकाव्य भी संस्कृतकाव्यश्री में अपूर्व उत्कृष्टता का अधान कर रहे है। भावपक्ष कला पक्ष द्विविध दृश्टि से ही इनमें सहृदय पाठाकों को अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता है। इनमें से कुछ दूतकाव्य पूर्व परम्परानुसार नायक–नायिका के विरह को आधार बना कर लिखे जा रहे है, जबकि कुछ कवियों ने समसामयिक विषयों को प्रमुखता दी है।

आधुनिक संस्कृत दूतकाव्यों में कथावस्तु की दृष्टि से नवीनता दिखलायी देती है। इनमें कुछ काव्यों में हमें भारत की महिमा का दिग्दर्शन होता है। इस दृष्टि से कुछ दूतकाव्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है –

भारतसंदेश

शिवप्रसाद भारद्वाज विरचित यह संदेशकाव्य संस्कृत संदेशकाव्य परम्परा में अनुपम है। मन्दाक्रान्ता छन्द में निबद्ध यह काव्य पूर्वोतर दो भागों में विभक्त है। पूर्व भाग का नाम दर्शन खण्ड है, जिसमें 153 पद्य हैं तथा उतर भाग का नाम संदेशखण्ड है जिसमें 219 पद्य हैं, इस खण्ड में भारत के राष्ट्रपति के मुख से विश्व के प्रति भारत का शांतिसदेश वर्णित है।

कवि ने पूर्व भाग में भारत की महिमा एवं गौरव को वर्णित किया है भारत की महिमा का यह पद्य द्रष्टव्य है –

यस्मिन् भूपे कयति शुभां नीतिमात्मन्युदारां
शोको वह्नौ मनसि विजयो दुन्दुभौ दण्डपातः।
सडौ धर्मे यशसि च रूचिः नाम्नि कर्णे जपत्वं
दीक्षा दाने रतिरूपकृतौ वक्रताऽभूत् कृपाणे।।[2]

कवि ने स्थान–स्थान पर भारतीा महापुरूषों का उल्लेख किया है, यथा महात्मा गांधी, राजा राम मोहन राय, सुभाष चंद्र बोस, जवाहरलाल नेहरू, शिवाजी, रविन्द्रनाथ टैगोर, जयदेव, राजन्द्र प्रसाद, महावीर स्वामी, चन्द्रगुप्त, गौतम

बुद्ध, मदन मोहन मालवीय, बन्दा बैरागी आदि उल्लेखनीय है।

सुभाषचन्द्र बोस के विषय में कवि लिखते हैं –

योनिः सेयं तपनमहसः श्रीसुभाषस्य नेतु–

र्वक्षःक्षोभप्रजननपटोराङ्ग्लसाम्राज्यलक्ष्म्याः।

योधं योधं बहलमयशो दासताया जिहीर्षुः

पारे देशं प्रयत्नरतो यस्तनुं स्वामहौषीत्।।[3]

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत की उन्नति का वर्णन करते हुए अनेक स्थानों का सुंदर परिचय प्रस्तुत किया है यथा – मुम्बई, धारा, नासिक, साबरमती, टंकारा, रणतम्भौर, हल्दीघाटी, चितौड, मन्दसौर, उज्जैन, सांची, विदिशा, पूना, मैसूर, मद्रास, रामेश्वरम्, विशाखपटनम्, राउतकेला, कोलकाता, शांतिनिकेतन, शिलांग, गुवाहाटी, सिक्किम, मगध, सानाथ, वाराणसी, लखनऊ, कुमायुं, हरिद्वार, गढवाल, बद्रीनाथ, कुरूक्षेत्र, थानेसर, चण्डीगढ़, लुधियाना, अमृतसर, पठानकाट, जम्मू, कश्मीर आदि स्थान प्रमुख है। उतरभाग में कवि ने भारत की राजधानी दिल्ली का विस्तार से वर्णन किया है जिसमें कनाट प्लेस, राजघाट, लाल किला, जामा मस्जिद, चांदनीचौक आदि स्थानों का वर्णन किया है।

रणथम्भौर के वर्णन में कवि कहते हैं –

आर्तत्राणव्रतहुततनोस्ते रणस्तम्भदुर्ग

हम्मीरस्य प्रथितश्यासो वीक्ष्य नेमुः शिरोभिः।

यस्याऽऽक्रान्तृक्षपणसुपटोः खडधाराऽम्बुराशौ

निर्वाणोऽभूत्सपदि खिलजीभूपतेजोऽब्जवह्निः।।[4]

कवि के अमृतसर के जलियांवाले बाग के चित्रण में परतंत्रता के दिनों हुए अत्याचारों की याद दिला दी है –

आरामोऽसावथ च जलियाँसंज्ञकोऽत्रैव यस्मिन्

मातुर्हर्तु निगडकलनामुत्सुका भारतीयाः।

आंग्लैश्वर्यद्रढनमिना क्रूरमो डायरेणाऽ–

शास्त्रा भृष्टा अविरलचलद्यन्त्रनालीकवर्षैः।।[5]

काश्मीर का वर्णन विशेश रूप से उल्लेखनीय है –

कश्मीराधाणामिह ही धरणी धारिणी विस्मयानां

शोभाधानी भुवनरमणी तर्पयित्रीन्द्रियाणाम्।

पीयूषाऽऽशैरहतममरैर्भुक्तिलाभाद् वितृष्णै

रत्नं नूनं सलिलकुहरादुद्धृतं कश्यपेन।।[6]

अन्त में भारत की ओर से विश्व शांति का संदेश दिया गया है –

भूयाद् विश्वं भविक–भविकं प्राणिनां प्राणनं वा

मुक्तद्वन्द्वं भवहरमियाज्जीवजीवो विकासम्।

अस्तं चुम्बेदशिवकरणी क्लेशगाथा जगत्याः

सर्वः पूर्णो भवतु परमानन्दमद्वन्द्वमृच्छल्।।[7]

मरूत्संदेश :–

इस नीवन काव्य के रचियता पुलिवर्ति शरभाचार्य हैं। ये आन्ध्रप्रदेश के निवासी है। इसमें कुल 281 पद्य हैं। इस काव्य रचना काल 1963 ई. है। इसमें मन्दाक्रांता छंद का प्रयोग है।

दक्षिणान्ध्र के प्रसंग में नायक प्रसिद्ध भारतीय गणिज्ञ भास्कर का स्मरण करता है –

योऽश्रान्तास्सुनिशितदृशा क्षेत्रबीजाडकीर्णा

दृष्ट्वा ततत्क्षण विघटितग्रंथि बन्धाश्च कुर्वन्

साक्षीभूतो मुहुरभिनवो 'भास्करो' ह्मध्यवृतः।।[8]

इसके पश्चात मार्गवर्णन प्रारंभ होता है, जिसके प्रसंग में नायक ने अनेक भारत के महनीय स्थलों एवं भारतीय महापुरूषों का सुंदर वर्णन किया है। मरूत की यात्राा में गद्वाल, वनपर्ति, मेहबूब नगर, हैदराबाद, मुम्बई, वाघिरा नदी, ऐलोरा की गुफाएँ, वर्धा, नागपुर, नर्मदा नदी, विंध्याद्रि पर्वत, भिलाई, दुर्गापुरा तथा रावुर्केला के कारखाने, कलकता, शांतिनिकेतन, जमशेदपुर, गया, सारनाथ, गड़ा, बनारस, विश्वनाथ, मंदिर, दिल्ली, राजस्थान, शिमला, अमृतसर, सतलुज नदी, नंगल आदि स्थानों का वर्णन है। इनको पार कर मरूत को हिमालय पर भारत चीन सीमा तक लढक प्रांत जाना है। मार्ग में आने वाले स्थानों के वैशिष्ट्य का भी कवि ने वर्ण किया है।

वनपर्ति नगर साहित्य का महान केंद्र है। नायक कहता है –

मार्गे पश्चात परभृतशकाश्शारिकाश्शखिकाव–

श्छायासीनैर्व्रनियमितभिश्छात्रकैस्पर्धमानाः।

तत्रायातप्रथितविदुषां काव्यशास्प्रसडान

प्राहुस्तत्र प्रकट 'वनपर्त्यन्त' तरे रून्धि यानम्।।[9]

हैदराबाद का वर्णन नायक ने विशदता से किया है, जिसके अन्तर्गत कवि ने स्वतंत्रता सेनानी हैदर अली, महान् शिल्पी ताडुरी लक्ष्मणाचार्य, सिने तारिका जमुना तथा भानुमति एवं अभिनेता यन. टी. रामाराव तथा, ए. नागेश्वरराव, पार्श्व गायिका सुशील तथा जानकी, मंत्री यम, आर. अप्पाराव, रामभक्त वप्पगंतुल लक्ष्मण शास्त्री, वृद्ध कवि तापी धर्माराव आदि का वर्णन किया है।

राजस्थान के वर्णन में कवि ने वहा की यशगाथाओं के साथ ही महारानी पद्मिनी के अप्रतिम सौन्दर्य का वर्णन किया है–

आकृष्टिश्रीमधुसुखमयी ˙ चाग्रगण्यां स्वसृष्टयां

कान्तस्वर्णद्रवणफणितज्यौत्निकानां पद्मिनीस्त्री

शीलं यस्याः किल दिविभुवि प्रातनो च्चात्मगंधान्।।[10]

इसके अतिरिक्त कुछ भारतीय महापुरूषों का नामोल्लेकख भी इस काव्य में प्राप्त होता है, जिनमें प्रमुख रूप से के. एम. मुन्शी. भीमराव अम्बेडकर, महात्मा गांधी, श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, रविन्द्रनाथ टैगोर, गौतम बुद्ध, पं. जवाहरलाल नेहरू, श्री ताताचार्य, सुमित्रानन्दन पंत, शिवमंगल सिंह सुमन, हरिवंशराय बच्चन, जाकिर हुसैन, वास्वानी, मुंशी प्रेमचन्द, महाकवि शंकर कुरूप, मोरारजी देसाई आदि उल्लेखनीय है।

अन्त मे नायक संदेश के रूप में भारत एवं विश्व में सर्वत्र शांति की कामना करता है।

प्रस्तुत संदेशकाव्य में अनेक महापुरूषों के चरित्र का वर्णन, स्थान–स्थान पर राष्ट्रभक्ति की भावना, विभिन्न प्रांतो की शौर्यगाथाओं आदि का कवि ने विस्तार से वर्णन किया है। एवं भारतीय राजनीति एवं साहित्य के नायकों के चरित्रचित्रण के वर्णन में है। कवि ने दूतकाव्य परम्परा को विशुद्ध श्रृडारिक भावभूमि से निकलकर देशभक्ति की ओर ले जाने का प्रयास किया है।

मलयदूतम :

मलयदूतम के रचियता पं. प्रबोकध कुमार मिश्र है। काव्य में मन्दाक्रांता छंद में विरचित 105 पद्य हैं। इस काव्य पर कवि को 1989 में उडिसा साहित्य अकादमी ने पुरस्कृत किया है। राष्ट्रिय भावना से ओतप्रोत इस काव्य में एक स्वतंत्रता सेनानी जो कि कारगार में बंद है, वह अपनी हार्दिक भावनाओं को व्यक्त करता है –

कश्चित्लेता जनगणमनो वेदनादोर्ण्णचेताः

स्वाधीनानां मधुरकवितां गातुकामः प्रशांतः।

जातेः स्वप्नं नु सफलयितुं कर्मनिश्ठो महार्हः

कारागार सुखभवनवत् चिन्तयन यः समासीत्।।[11]

उसकी पीड़ा है कि आल स्वकतंत्रता सेनानीयों के बलिदान एवं समर्पण की भावना को देशवासियों ने भुला दिया है तथा नेता गांधी जी की विचारधारा को भूलकर शक्ति–प्रदर्शन में लगे हुए है। वह मलय के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है। कवि ने स्वतंत्रकता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वालेक भगतसिंह, खुदीराम बोस, बाघा जतिन, बाजी राएत, रासबिहारी बसु, वीर सुरेन्द्र साई, लक्ष्मण नायक, पं. गोपबंधु दास, कन्हैयालाल, रानी लक्ष्मी बाई आदि अनेक वीरों का उल्लेख किया है। ऐसा ही एक पद्य द्रष्टव्य है –

गांधेः मन्तं निरसजवाहारनेतालिलालाः

राजाज्याजाद् चटुलपटिलाश्वपि नेतृप्रमुख्याः।

पीत्वो कर्ण्णेः सरभसमदः त्यक्तसंसारमोहाः

कारावासं व्यथिह्रदयोत्यश्वासपूर्ण नु चक्रुः।।[12]

कवि ने इस दूतकाव्य के माध्यम से पुनः देश में गांधीवादी विचारधारा की ओर जनमानस को उन्मुख करने का

प्रयास किया है। साथ ही स्वतंत्रता–संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले शहीदों को भी स्मरण किया है। इस काव्य में कई ऐसे भी वीरों का उल्लेख प्राप्त होता है जिनके नाम राष्ट्रीय परिदृश्य पर विस्मृत हो चुके है। वर्तमान में लोगों की शहीदों के द्वारा किये गये बलिदानों के प्रति विमुखता से कवि चिन्तित है।

मृगाडदूतम् :

अभिराज राजेन्द्र मिश्र विरचित यह दूतकाव्य पूर्ववर्ती दूतकाव्यों से भिन्न है। काव्य दो भागों में विभक्त है– पूर्वमृगाड एवं उतरगाड। पूर्वमृगाड में 55 एवं उतरमृगाड में 74 पद्य है। छंद मन्दाक्रांता है। काव्य में कल्पना एवं परम्परा का आश्रय नही लिया गया है। कवि ने अनुभवसिंद्ध तथ्यों के आधार पर इस काव्य का निर्माण किया है। कवि दो वर्ष के लिए बाली द्वीप पर जाकर निवास करते है। वही से वे मृगाड अर्थात चन्द्रमा को दूत के रूप में भारत में भारत भेजते है।

कवि ने भारतीय राज्यों की कला एवं संस्कृति का भी काव्य में सुंदर वर्णन किया है–

आंध्रेशास्त्रं भरतनटिते द्रविडे कर्मकाण्ड्म्

सज्जागर्तिः कथकलिकला केरले राजभूमौ।

प्रौगैतिह्मं पशुकृषिधनं हारिहर्रूाणराज्ये

सौजन्यं वा समधिकतरं गुर्जरे सौम्यरूपे।।[13]

उतरमृगाड में कवि ने भारत के प्रमुख स्थानों यथा स्थानों रामेश्वरम, कन्याकुमारी, त्रिचूर, मदुरै, श्रीरंगम्, जम्बुकेश्वरम्, तंजोर, कांची, तिरूपति, गौहाटी, जयपुर आदि एवं व्यक्तियों यथा एम.मुकुन्दम शर्मा, सत्यव्रत शास्त्री, रमाकांत शुक्ला, दुर्गा प्रसाद, भट्ट मथुरानाथ शास्त्री, कलानाथ शास्त्री, सिंधु डांगे, क.कृष्णमूर्ति, पी.मलिकाज्रुन, श्रीनिवास रथ, राधावल्लभ त्रिपाठी, कृष्णकांत चतुर्वेदी, चण्डिका प्रसाद शुक्ल, आद्या प्रसाद मिश्र, लक्ष्मीकांत दीक्षित आदि का वर्णन किया है।

कवि को इस दूतकाव्य मेबाली, सुमात्रा, जावा द्वीप के अतिरिक्त भारत के नगरों तथा प्रमुख संस्कृत विद्धानों का उल्लेख ही प्रमुख रूप से अभिप्रेत है।

इस दूतकाव्य के प्रणयनकर्ता श्री मन्दिकल रामशास्त्री हैं। ये दक्षिण भारत के आधुनिक काल के उल्लेखनीय संस्कृत विद्वान है। मन्दाक्रांता छंद में निबद्ध यह काव्य दो सर्गो में विभक्त है। प्रथम सर्ग में 68 तथा द्वितीय सर्ग में 96 पद्य है। इस काव्य के पूर्वभाग में यक्षी का यक्ष के प्रति संदेश तथा द्वितीय भाग में अलका से रामेश्वर तथा धनुष्कोटि तल के मार्ग का वर्णन किया है।

मार्ग वर्णन मे पंजाब, अमृतसर, देहली, जयपुर, उदयपुर, चितौड़, उज्जयिनी, बैगलोर, मैसूर आदि नगरों का बड़ा ही भावपूर्ण वर्णन किया हैं चितौड़ के वर्णन में वहाँ की स्त्रियों की वीरता का वर्णन द्रष्टव्य है –

चितोडाख्यं जयति नगरं तैर्नृपैः पाल्यमानं।

घोरे युद्धे विनिहतधवाः विश्रुताः वीरपत्नयः।

क्षुद्रारिभ्यो निजकुलभयं शडमानाश्च यस्मिन्

पातिव्रत्यप्रवणमतयो बृन्दशोऽग्निं प्रविष्टाः।।[14]

मार्ग वर्णन में कवि ने शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, व्यास राजाचार्य आदि पुरूषों का ततद् स्थानों पर वर्णन किया है।

अतः स्पष्ट है कि संस्कृत साहित्य की अन्य विधाओं के समान ही आधुनिक दूतकाव्यों में भी कवियों ने भारत की महिमा का वर्णन किया है। इसक लिए कवियों ने अपनी प्रतिभा से कहीं मार्ग वर्णन में भारत की महिमा का वर्णन किया है तो कहीं नायक, नायिका अथवा दूत के माध्यम से भारत की महिमा को उद्धृत किया है। दूतकाव्यों में यह वर्णन निश्चित रूप से अतिशय को प्राप्त हुआ है, जिसमें यथार्थ के साथ कवि की मधुर कल्पना ने इसको और अधिक रमणीय बना दिया है।

***व्याख्याता**
सामान्य संस्कृत,
राजकीय आचार्य संस्कृत, महाविद्यालय
भरतपुर, (राज.)

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. ऋग्वेद 4.26.2
2. भारत सन्देश 1.9
3. वही 1.12
4. वही 1.34
5. वही 1.126
6. वही 1.139
7. वही 2.128
8. मरूत्सन्देशः 1.25
9. वही 2.36
10. वही 169
11. मलयदूतम् 1
12. वही 52
13. मृगाडदूत 1.26
14. मेघप्रतिसन्देश 2.25